!देवसंघ नेशनल स्कूल में जन्माष्टमी उत्सव का आयोजन !

भगवान कृष्ण के जन्म का जीवंत और आनंदमय उत्सव, जन्माष्टमी, हमारे दिलों में एक विशेष स्थान रखता है। जैसा कि यह उत्सव केवल अनुष्ठानों और मिठाइयों के बारे में नहीं है; यह हमारे छात्रों को मूल्यवान जीवन के सबक देने का एक गहरा अवसर है। भगवान कृष्ण, ज्ञान, साहस और जिम्मेदारी के अवतार, सफलता और जिम्मेदारी के लिए प्रयास करने वाले सभी युवा दिमागों के लिए एक अनुकरणीय रोल मॉडल हैं। हम उन अमूल्य पाठों पर चर्चा करें जो बच्चे भगवान कृष्ण से सीख सकते हैं। आइए भगवान कृष्ण की उन कालातीत शिक्षाओं को जानें जो युवा दिमागों को सफल और जिम्मेदार व्यक्तियों में बदल सकती हैं।

❖ ज्ञान की खोज

भगवान कृष्ण के व्यक्तित्व के सबसे प्रमुख पहलुओं में से एक ज्ञान के लिए उनकी अतृप्त खोज है। हमारे छात्रों को जिज्ञासु बनने, सवाल करने और जीवन के सभी पहलुओं में ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना उन्हें सफलता की ओर ले जा सकता है। कृष्ण की बुद्धि हमें सिखाती है कि सीखना एक आजीवन यात्रा है, और जितना अधिक हम जानते हैं, उतने ही बेहतर हम जिम्मेदार निर्णय लेने के लिए तैयार होते हैं।

❖ जिम्मेदारी और नेतृत्व

कृष्ण, एक राजकुमार के रूप में और बाद में एक दिव्य नेता के रूप में, जिम्मेदारी और नेतृत्व के गुणों का उदाहरण देते हैं। उन्होंने महाभारत में पांडवों का मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी स्वीकार की और अटूट प्रतिबद्धता के साथ नेतृत्व किया। बच्चे सीख सकते हैं कि जिम्मेदारी लेना और जिम्मेदार विकल्प बनाना किसी भी प्रयास में सफलता के लिए आवश्यक है, चाहे वह अकादमिक हो या व्यक्तिगत जीवन।

❖ प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में लचीलापन

कृष्ण ने अपने जीवन में कंस की विश्वासघाती योजनाओं से लेकर कुरुक्षेत्र के महाकाव्य युद्ध तक कई चुनौतियों का सामना किया। इन बाधाओं पर काबू पाने में उनका लचीलापन हमारे छात्रों के लिए एक शक्तिशाली सबक है। यह उन्हें सिखाता है कि असफलताएँ जीवन का एक हिस्सा हैं और सच्ची सफलता व्यक्ति की अधिक मजबूती और दृढ़ संकल्प के साथ वापस आने की क्षमता में निहित है।

❖ करुणा और सहानुभूति

कृष्ण की सभी प्राणियों के प्रति करुणा और सहानुभूति, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, ऐसे गुण हैं जिन्हें बच्चों को अपनाना चाहिए। दया और सहानुभूति के महत्व को समझना उन्हें जिम्मेदार व्यक्तियों के रूप में आकार दे सकता है जो समाज में सकारात्मक योगदान देते हैं।

❖ आत्मविश्वास और विश्वास

भगवान कृष्ण आत्मविश्वास और अपनी क्षमताओं में विश्वास के प्रतीक थे। खुद पर और अपने भाग्य पर उनके अटूट विश्वास ने उन्हें महानता हासिल करने के लिए सशक्त बनाया। हमारे छात्रों को खुद पर और अपने सपनों पर विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करना सफलता के लिए एक महत्वपूर्ण सबक है।

❖ समय प्रबंधन

कृष्ण समय प्रबंधन के उस्ताद थे। उन्होंने एक राजकुमार, एक गुरु और एक दिव्य प्राणी के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को कुशलतापूर्वक संतुलित किया। हमारे छात्रों को समय का महत्व और प्रभावी समय प्रबंधन सिखाना उन्हें एक सफल भविष्य के लिए तैयार कर सकता है, जहाँ वे कई ज़िम्मेदारियाँ निभा सकते हैं।

❖ सत्यनिष्ठा और ईमानदारी

कृष्ण की सत्यनिष्ठा और ईमानदारी ऐसे मूल्य हैं जो हमें अपने बच्चों को अवश्य देने चाहिए। सत्यनिष्ठ होना और ईमानदारी से काम करना ज़िम्मेदारी और सफलता के मूल सिद्धांत हैं।

❖ टीमवर्क और सहयोग

महाभारत में कृष्ण की भूमिका टीमवर्क और सहयोग के महत्व को दर्शाती है। हमारे छात्र सीख सकते हैं कि एक साथ काम करना और एक-दूसरे की ताकत और कमज़ोरियों का सम्मान करना साझा लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है।

जब हम स्कूल में जन्माष्टमी उत्सव मनाने जा रहे हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि यह शुभ अवसर केवल मौज-मस्ती के बारे में नहीं है, बल्कि भगवान कृष्ण के जीवन से मूल्यवान जीवन के सबक सीखने के बारे में भी है। अपने छात्रों में ज्ञान-प्राप्ति, ज़िम्मेदारी, लचीलापन, करुणा, आत्मविश्वास, समय प्रबंधन, ईमानदारी और टीमवर्क के गुणों को विकसित करके, हम कल के प्रतिभाओं और ज़िम्मेदार नागरिकों का पोषण कर रहे हैं। भगवान कृष्ण का आशीर्वाद हमारे बच्चों को उनके शैक्षणिक प्रयासों और जीवन में सफलता और ज़िम्मेदारी की ओर ले जाए।

इस कृष्ण जन्माष्टमी पर, आइए हम न केवल भगवान कृष्ण के जन्म का उत्सव मनाएं, बल्कि हमारे युवा शिक्षार्थियों के दिल और दिमाग में इन आवश्यक जीवन पाठों के जन्म का भी उत्सव मनाएं।

!जन्माष्टमी की शुभकामनाएँ!

अवन्तिका आनन्द